

अंडबंड	— बड़बड़ई (व्यर्थ प्रलाप)। गारी—गल्ला (गाली—गलौच)। टेरगा—पेचका (टेढ़ा—मेढ़ा)।
अड़ानी	— अटकाए बर टेकाथे तउन जिनिस (अटकाव के लिए प्रयुक्त वस्तु)। कुस्ती के दाँव (मल्ल युद्ध का एक दाँव)। अगियानी (अज्ञानी)।
अदर—कचर	— बिन सुवाद के (सुवादहीन)। अधचुरहा (अधपका)। जतर—कतर (अस्त—व्यस्त)।
अपसोसी	— स्वारथी (स्वार्थी)। पेटमाँहदुर (अधिक खाने वाला)। कोनो जिनिस ला जादा ले जादा धरे के उदिम करइया (किसी वस्तु को अधिक से अधिक प्राप्त कररे का प्रयास करने वाला)।
अभरना	— संघरना (मिलना)। धर (पकड़)। छुए के भाव (स्पर्श)। पहुँच (यथावत)।
अरझना	— फसड़ना (फँसना)। लटकना (यथावत)। गुरमेटाना (उलझना)। अटकना (यथावत)।
अलकर	— दुखदई (कष्ट दायक)। साँकुर जगा (संकीर्ण जगह)। तन के ओ भाग जउन ला देखाय नइ जा सके (गुप्तांग)।
आरा	— लकड़ी चीरे बर लोहा के दाँतादार पट्टी (लकड़ी चीने के लिए लोहे की दाँता वाली पट्टी)। बइला गाड़ा के चक्का मा लगे ठाढ़ लकड़ी। (बैलगाड़ी के पहिये में लगी खड़ी लकड़ी)। पानी बोहाय के रद्दा (जल प्रवाह मार्ग)।
उठाना	— ठाड़ करना। (खड़ा करना)। उचाना (जगाना)। बोझा उचाना (भार वाहन करना)। बढ़ना (उन्नत करना)।
ऐँठना	— अँइठाना (मुड़ जाना)। ठगा जाना (यथावत)।
ओरियाना	— ओरी—ओरी करना (क्रमबद्ध करना)। गाजना (थप्पी करना)। बिगराना (फैलाना)। बीते बात ला दुहराना (बीती बातों को प्रस्तुत करना)।
ओसरी	— घर के परबित जगा (घर का पवित्र स्थान)। घर के परमुख जगा (घर का मुख्य भाग)। पारी (पाली)।
कड़कना	— कड़—कड़ के आवाज करना (कड़—कड़ की आवाज करना)। तेल, घीव आदि के तीपना (तेल, घी आदि का तपना)। तेल मा लुसन, जीरा आदि ला भूँजना (तेल में लहसुन, जीरे आदि का भुनना)। रोहिना मारना (बिजली चमकना)।
कलगी	— पागा मा लगाए फूल के गुच्छा (पगड़ी में लगाया जाने वाला पुष्प—गुच्छ)। मंजूर नइते कुकरा के मुँड़ी के मुकुट (मोर या मुर्गे के सिर की चोटी)। चूँदी मा लगाए, जाथे तउन कंधी (बाल में लगाया जाने वाला कंधा)।

कसाना	— खाए के जिनिस हा करुवा जाना (भोज्य पदार्थ में कसैलापन आना)। खिंचा जाना (खींच जाना)। सोंचे-बिचारे के नइते अनभो के मुताबिक बुता करे के गुन आना (गंभीरता या अनुभव-शीलता आना)।
काठी	— घोड़ा के पीठ मा मड़ाथे तउन आसनी (घोड़े की पीठ पर रखने की जीन)। तन के ठाठा (शरीर का ढाँचा)। मुरदा लेगे खातिर बाँस के बनाए खटोला (शव ले जाने के लिए बाँस का बना ठाठ)। माटी दे बर जाए के बुता (मृतककर्म)।
कुसी	— गेहूँ, जौ आदि के फोकला (गेहूँ, जौ आदि का छिलका)। पँड़री-भूरी रंग के (सफेद-भूरे रंग की (गाय, बिल्ली))। नान-नान आँखीं वाली (छोटी-छोटी आँखों वाली)।
खरोना	— ओनहाँ धोए खतिर पानी तिपोना (कपड़ा धोने के लिए पानी गरम करना)। सखार करना (अधिक नमकीन करना)। घीव नइते तेल ला जरो डारना (घी या तेल को जला डालना)।
खिरना	— नानचुन होना (छोटा होना)। गवाँ जाना (गुमजाना)। नँदा जाना (प्रचलन समाप्त होना)।
गचकना	— झंझोटना (हिचकोलना)। मरई-धमकई करना (प्रताड़ित करना)। ठठाना (मारना)। दगा देना (धोखा देना)।
गजरा	— गाजा (झाग)। फूल के गोप्फा (पुष्प-गुच्छ)। ढोल के डेरी ताल (ढोलक की बाईं ताल)। ताल के कोर मा लगे चमड़ा के गोल पट्टी (ताल पर लगी किनारे वाली चमड़े की गोल पट्टी)।
गाज	— बिपत (विपत्ति)। बाफुर (झाग)। पानी भीतरी के एक पउधा (एक जलीय पौधा)।
गुम्जा	— कलेचुप रहइया (शांत रहने वाला)। अलाल (आलसी)। मिंझरल (मिश्रित)।
चढ़ाव	— बिहाव बेखन दूलहा डाहन ले भेजे गहना, ओनहाँ अउ आने सिंगार के जिनिस (विवाह के समय वर पक्ष से भेजे जाने वाले आभूषण, वस्त्र एवं अन्य श्रृंगारिक वस्तुएँ)। ऊँच भुइयाँ (ऊँची भूमि)। कोनो जिनिस के किम्मत नइते नहिदया के पानी बढई (किसी वस्तु के मूल्य में अथवा नदी के जल में वृद्धि)। देवी-देवता मन ला चढ़ाए जाथे तउन जिनिस (देवी-देवताओं को अर्पित की जाने वाली वस्तु)।
चपकना	— मसकना (दबाना)। लुकाना (छिपाना)। चटकना (चिपकना)।
चकरना	— गुँसियाना (गुस्सा होना)। कुड़कना (चिढ़ना)। टूटना (यथावत)। दर्रा फाटना (दरार पड़ना)।

चराना	— दर्रा फाटना (दरार पड़ना)। चिरा जाना (फट जाना)। घाम चरचराना तेज धूप लगना। मार परे ले दरद होना (चोट लगने से दर्द होना)।
चलाना	— निभाव करना (निभाना)। उपयोग करना (व्यवहत करना)। चालू करना (चालू करना)। मुख बनाना (बेवकूफ बनाना)। रोपा लगाना (रोपाई करना)। चन्नी चलवाना (चलनी कराना)।
पुरुत	— पुरुत (तह)। साँकुर (संकीर्ण)। सपाट (चिपका हुआ)। चिपचिपहा (चपचपहा) लट बँधाए (लटा हुआ)। काँटा के ढेरी (काँटों का ढेर)।
चुरना	— पछताना (पछताना)। जेवन चुरना (भोजन का पकना)। बिपत ला सहना (विपत्ति झेलना)। नंगत के मिहिनत करना (कठोर परिश्रम करना)।
चूरा	— हाँत के एक गहना (हाथ में पहनने का कड़ा)। कोनो जिनिस मा लगाए खातिर लोहा आदि ले बने चूरी (किसी वस्तु में लगाने के लिए लोहे आदि की बनी गोल पट्टी)। साँकुर (सकरा)। नानकुन (छोटा)। भूरका (चूर्ण)।
चोभा	— काँटा (काँटा)। पीकी (अंकुरण)। चोभी (ढूँठ)।
छनकरना	— डर्रा के भागना (बिदकना)। भुरका के उड़ियाना (चूर्ण का उड़ना)। गिर पानी नइते कोनो तरल जिनिस के कड़ा वस्तु मा टकराए ले बारिक-बारिक कन मा बँट के छिटकरना (गिरते हुए पानी या किसी अन्य तरल पदार्थ का कठोर वस्तु से टकराकर छोटे-छोटे कणों में विभक्त होकर बिखरना)। बरखा के फुहार परना (वर्षा की फुहारें पड़ना)।
छपहा	— दू किलो अनाज नापे के काठा (दो किलो अनाज आदि का आकारमापी-काठा)। छपल (छपा हुआ)। नान्हें (छोटा)।
छराना	— मार खाना (मार खाना)। छरा जाना (क्षतिग्रस्त होना)। नान-नान कुटका होना (टुकड़ों में विभक्त होना)। कुटाना (कुटाना)।
जनाना	— तिरिया (स्त्री)। याद देवाना (स्मरण कराना)। अनभो कराना (अनुभव कराना)। बताना (बताना)।

जिपरहा	— गोठ-गोठ मा किरिया खवइया (बात-बात में सौगंध खाने वाला)। कीरा खवइया (कीट-भक्षी)। सूम (कृपण)। जिददी (हठी) काम-बुतस ल धीरलगना करइया (टालमटोल करना)
जोरना	— जोड़ना (जोड़ना)। सकैलना (संचित करना)। डारना (भरना)। भेंट कराना (मिलाना या आमने-सामने करना)।
झार	— विख (विष)। पेंड़ (पेड़)। खूब महकना (तीखी गंध करना)। गुँस्सा (गुस्सा)।
झोइला	— अंगार वाले कोइला (जलता हुआ कोयला)। झोलंगा (ढीला-ढाला)। कोचरहा (कुंचित)।
ठसना	— मोल-भाव होना (सौदा तय होना)। जोम देना (भीड़ना)। ठेस लागना (टकराना)।
ठुरा	— ठूरू (अँकुरित न हो पाने वाला बीज)। झुक्खा (शुष्क)। टाँठ (कड़ा)। बंठा (बौना)।
डँटना	— चिपकना (सटना)। भीड़ना (प्रवृत्त होना)। सकलाना (एकत्रित होना)।
डोलना	— हालना (हिलना)। बात ले हटना (वचन बद्ध न रहना)। गलती होना (गलत होना)। सुध बिसराना (भूल होना)।
ढारना	— उलदना (ढालना)। गिराना (गिराना)। थिराना (विश्राम करना)।
ढोकरना	— लकर-लकर पीना (जल्दी-जल्दी पीना)। घेरी-बेरी गोहराना (बार-बार अनुनय करना)। अथक होना (असमर्थ होना)। मँड़िया के पाँव परना (घुटने के बल बैठकर प्रणाम करना)।
ढाढ़िहा	— पानी के रहइया एक ठन साँप (पानी में रहने वाला एक सर्प)। साँप के अकार मा एक परकार के करधन (सर्प के जैसा दिखने वाला एक प्रकार का कटिबंध)। कोनो पीये के जिनिस ला बिक्कट के पियइया (किसी पेय पदार्थ को अधिक पीने वाला)।
तनना	— अँटियाना (अकड़ना)। बल बाँधना (हिम्मत करना)। झिंकाना (खिंचाना)। बाढ़ना (फैलना)।
ताव	— गुँस्सा (क्रोध)। रोस (जोश)। गुमान (अहंकार)। आँच (ताप)।
दररना	— लस खाना (पस्त होना)। थकना (थकना)। ओनहाँ आदि के चिराना (कपड़ा आदि का फटना)।

धँसना	— खुसरना (गड़ना)। गोभाना (चुभना)। फसड़ना (फँसना)।
धनी	— गोसइयाँ (पति)। मालिक (स्वामी) धमान (धनवान)।
धमकना	— मुँड़ पिराना (सिर दर्द होना)। आना (आना)। जाना (जाना)।
नजराना	— टोनहाना (जादू-टोना करना)। अँखियाना (नेत्र से संकेत करना)।
निमगा	— जुच्छा (खाली)। आरुग (शुद्ध)। सिरिफ (सिर्फ)।
नेतना	— आँकना (अनुमान लगाना)। बुता नेमना (कार्य सौपना)। भँउरा मा नेती लपेटना (भौरे में रस्सी लपेटना)। मकान मा छान्हीं छाए खातिर भदरी पीटना (मकान में खप्पर छाने के लिए लकड़ी का ढाँचा तैयार करना)।
पकलाना	— पाक जाना (पक जाना)। पिंउराना (पीला पड़ जाना)। चूँदी पाक जाना (बाल का सफेद हो जाना)। बुढ़ा जाना (वृद्ध हो जाना)। बिमारी के सेती झिटका जाना (बिमारी से कमजोर हो जाना)।
पटिया	— खटिया-पाटी (खाट की पाटी)। बाजवट (तखत)। छान्हीं के बीचों-बीच एक लम्बा अउ मोट्ठा लकड़ी जउन हा कड़ी जइसे काम करथे (छत्तपर के नीचे की एक लंबी एवं मोटी लकड़ी जो कड़ी के जैसा काम करती है)।
पटियाना	— इंतकाल होना (मर जाना)। पाटी पारना (कंधी करना)।
पठवाना	— भेजवाना (भेजवाना)। चिक्कन हो जाना (चिकना हो जाना)। कई रच जाना (काई जम जाना)।
परपराना	— जीभ मा जलन होना (जीभ में जलन होना)। जाड़ के सेती चमड़ी मा झुरी आना (ठंड के कारण त्वचा में खिंचवा होना)। पेंड़-पउधा ऊ मा नंगते हे फर धरना (पेड़-पौधे आदि में अधिक फल लगना)। पेंड़ ले फर मन के नंगते हे झरना (वृक्ष से फलों का अधिक मात्रा में झड़ना)।
पाना	— पतई (पत्ता)। पना (पना)। कोरा मा पाना (गोद में लेना)। मिलना (प्राप्त करना)।
पार	— जात बिसेस के खंझा (जाति विशेष का टुकड़ा)। नदिया-नरवा के कोर (नदी-नाले का कूल)। कुआँ के पार (कुएँ

की जगत)। गम नइते हिआव (पता जया जानकारी)।

पेलना — मछरी पकड़े के तीनकोनियों झोल्ली (मछली पकड़ने का एक तिकोना जाल)। मछरी पकड़े बर पानी मा झोल्ली डारना (मछली पकड़ने के लिए पानी में जाल डालना)। धकियाना (धक्का देना)। अपनेच बात ला मनवाना (अपनी ही बातों को मनवाना)।

पोक्खाना — फर मा बीजा के पोक्खो होना (फल्ली में दाने का पुष्ट होना)। कोनो जिनिस के उपयोग नइते जादा होए ले अघा जाना (किसी वस्तु के उपयोग या अधिकता से तृप्त होना)। धनवंता होना (धनवान होना)।

पोट्ठ — मजबूत (मजबूत)। पोक्खा दाना वाला (पुष्ट दानों वाला)। मोट्ठा (मोटा)। बड़े (बड़ा)। धनवंता (धनवान)। कड़ा (कड़ा)। बजनी (भारी)।

फरी — ढार नाँव के औजार (ढाल नामक अस्त्र) साफ (स्पष्ट)।

फाँदना — नहाँकना (लाँघना)। कूदना (कूदना)। गाड़ा मा बइला फाँदना (गाड़ी में बैल को जोतना)। बाँधना (बाँधना)। फाँसना (फाँसना)। बुता मा लगाना (काम में लगाना)।

फाँदा — झोल्ली (जाल)। बाँधना (बंधन)। परसानी (परेशानी)।

फुन्नाना — साँप के फुफकारना (साँप का फुफकारना)। देहें आना (मोटा होना)। ताकती होना (ताकतवर होना)। बिक्कट उदबिरिस करना (अधिक उछल-कूद करना)।

फुरहरी — नाक मा पहिरे के सोन के एक गहना (नाक में पहनने का एक स्वर्णभूषण)। फूल-बाहरी (फूल-झाड़ू)। लउँग (लौंग)।

बइठना — आसनी मा बिराजना (आसन ग्रहण करना)। पिचकाना (दबना)। कमती होना (कम होना)।

बजरहा — बजारू (बाजार का)। सरस्तहा (सरस्सा)। बजार जवइया (बाजार जाने वाला)।

बरछा — कटारी (कटार)। खुसियार के खेत (गन्ने का खेत)। बरोबर ऊँचई वाला पउधा (समान ऊँचाई वाला पौधा)।

बरना	— कंडिल के बातील (बर्नर)। जरना (जलना)। डोरी बरना (रस्सी बटना)। घेपना (सानिध्य में रहना)।
बिछना	— जठना (विस्तर)। छिदरना (बिखरना)। मरना (मरना)।
बिसाना	— छिदराना (बिखरेना)। उपजाना (उत्पादन करना) सकेलना (संचित करना)। मोल दे के लाना (खरीदना)। हतिया करना (हत्या करना)।
बोहाना	— बोझा लादना (भार वहन कराना)। बोहा देना (प्रवाहित कर देना)। आदत-बेवहार ले गिरना (पतित होना)। गवाँ देना (गुमा देना)।
भड़कना	गुँस्सा होना (क्रुद्ध होना)। बइला, घोड़ा आदि के भन्नाना (बैल, घोड़े आदि का भन्नाना)। बड़े-बड़े लपट के संग आगी बरना (ऊँची लपटों के साथ आग जलना)। घाम मा झुखा के लकड़ी ऊ के चुरा जाना (धूप से सूखकर लकड़ी आदि का फटना)।
भदभदहा	— मोट्टा (मोटा)। गाढ़ (गाढ़ा)। भदर्रा (भददा)।
भन्नाना	— गुँस्सा होना (गुस्सा होना)। मुँड़ पिराना (मस्तक दर्द होना)। माछी आदि के भनभनाना (मक्खी आदि का भिनभिनाना)।
भरभराना	— गला भर जाना (गले का रूँधना)। पानी अउ घाम के सेती माटी ले ढेला नइ उपकना (वर्षा एवं धूप के प्रभाव से मिट्टी का असंगठित या कमजोर होना)। भभक के बरना (भर-भर करके जलना)। अगियाना (जलन होना)।
भितराना	— भीतर करना (अंदिर करना)। लुकाना (छिपाना)। बइलागाड़ा, नाँगर ऊ मा बइला नइते भईस्सा ला डेरी कोती फाँदना (बैलगाड़ी, हल आदि में बैल या भैंसे को बाईं तरफ जोतना)।
मउर	— आमा के फूल (आम का बौर)। कुकरा नइते मंजूर के मुकुट (मुर्गे या मयूर की कलगी)। सेहरा (सेहरा)।
मरना	— झुखाना (सूखना)। दुख भोगना (दुख सहना)। बड़ मर्याँ करना (अधिक प्रेम करना)। इंतकाल होना (मृत्यु होना)।

मरहा	— रेगड़ा (दुर्बल)। कंगला (निर्धन)। मरझुरहा (मृतवत)।
मायाँ	— जोगानी (धन)। किरवार (परिवार)। मयाँ (मोह)।
मिसतिरी	— हलवई (हलवाई)। राजमिसतिरी (राजगीर)। बढई (कारीगर)। मसीन बनइया (मशीन सुधारक)।
मुँड़ी	— मुँड़ (सिर)। कोर (किनारा)। छोर (छोर)। कोनो जिनिस के दूनों छोर के जोड़ (किसी वस्तु के दोनों सिरों की जोड़)।
मुँड़ेरना	मुक्केटना (मोड़ना)। डोरी आँटना (रस्सी बटना)। बाँधना (बाँधना)। भाँड़ी के ईटा-पत्थर ला गिरे ले बचाए खातिर माटी चघाना (दीवार के ईट-पत्थर को गिरने से बचाने के लिए मिट्टी चढ़ाना)।
मुड़ल	— मुँड़वाल (मुंडन किया हुआ)। लूटल (लूटा हुआ)। लहुटल (वापस हुआ)। नवल (झुका हुआ)। मुँड़े (मुड़ा हुआ)।
मुहेला	— मुँहजोरी (मुँहजोरी)। बिक्कट के मयाँ (अत्यधिक प्रेम)। सिंग दरवाजा (मुख्य दरवाजा)।
मोटइया	— मोट्ठा होवइया (मोटा होने वाला)। हितइया (संतुष्ट होने वाला)। गुमान करइया (घमंड करने वाला)।
रंगझाब	— कंकलहिन (कलह पैदा करने वाली)। पुचपुचहिन (रंगीन मिजाज वाली)। बिक्कट सज-धज के रहइया तिरिया (अधिक साज-श्रृंगार करने वाली)।
रचना	— थप्पी मारना (किसी वस्तु को क्रमबद्ध रखना)। सिरजना (निर्माण करना)। रंगना (रंगना)।
रसाना	— डबके ले रसा के गढ़ियाना (उबल कर रस का गाढ़ा होना)। बरतन मा होय टोंकी ला धातु ले मूँदवाना (बर्तन आदि में हुए छेद को धातु से बंद कराना)। पानी मा धान के भीगे ले चाउँर के पिंउराना (पानी में धान के भीगने से चावल में पीलापन आ जाना)। जादू-टोना के असर होना (तांत्रिक शक्तियों से प्रभावित होना)।
रिरयइया	— रेंदियहा (हठी)। चिल्लइया (चिल्लाने वाला)। गिड़गिड़इया (गिड़गिड़ाने वाला)।
रोँठ	— बिसेस परकार के रोटी (विशेष प्रकार की रोटी)। मोट्ठा (मोटा)। धनवंता (धनवान)। बड़े (बड़ा)।
सँटइया	— चुमइया (चयनकर्ता)। छँटइया (साफ करने वाला)। जोड़इया (जोड़ने वाला)
सवाँगा	— सजे-सँवरे के बुता (श्रृंगार करने की क्रिया या भाव)। सजे-सँवरे के जिनिस (श्रृंगार सामग्रियाँ)। तुरते (तत्काल)।

सँइतना	— सकैलना (संचित करना)। बाँचल भात मा पानी डारना (बचे हुए भात में पानी डालना)। दोहराना (मारना)। रमंजना (रगड़ना)। छेना बनाए के पहिली गोबर ला बने सानना (कंडा बनाने के पूर्व गोबर को रगड़ कर अच्छी तरह मिलाना)।
सधइया	— साद मरइया (इच्छा रखने वाला)। कोनो बुता के भरपूर जानकारी रखइया (किसी कार्य में दक्ष होने वाला)। अपने बुता ला पूरा करइया (अपने कार्य को पूर्ण करने वाला)। बचन के निभइया (वचन को निभाने वाला)।
सरी	— पुरुत (पर्त)। पूरा (पूर्ण)। बार (बार)
सानना	— मेलना (गूँथना)। मइलाना (गंदा करना)। मिंझारना (मिलाना)।
सेवर	— कौवर (नरम)। गेदरहा (अधपका)। नानकुन (छोटा)। लिल्हर (कमजोर)।
सेसा	— छोल्टी (चोकर)। छेछन (नाक की सूखी मैल)। गुमान (घमंड)।
हँथेलना	— हाँत ले ढकेलना नइते पीटना (हाथ से धक्का देना या मारना)। हँथियाना (पकड़ना)। चोराना (चुराना)।
हड़बड़ना	— लकर-लकर करना (जल्दबाजी करना)। भड़कना (डाटना)। लड़बड़ाना (लड़खड़ाना)।
हबरना	— धरना (पकड़ना)। मुहीं-के-मुहाँ होना (आमने-सामने हो जाना)। गड़ना (चुभना)।
हरना	— हरिना (हिरण)। नँदा जाना (प्रचलन समाप्त हो जाना)। चोरी हो जाना (चोरी हो जाना)। गवाँ जाना (गुम जाना)।
हलर-हलर	— बिन डर नइते संकोच के (बिना भय या संकोच के)। लक-लकर (जल्दी-जल्दी)।
हिरोना	— पोसवा बनाना (पालतू बनाना)। हराना (हराना)। परखना (परखना)

विलोम शब्द

हिन्दी	छत्तीसगढ़ी																				
जिन शब्दों से किसी दूसरे शब्द के उल्टे यानी विपरीत अर्थ का बोध होता है। उसे विलोम, विपरार्थी, विपरीतार्थी प्रतिलोम, प्रतिलोमार्थी, विरुद्धार्थी शब्द कहा जाता है। जैसे :-	जेन शब्द ले कोनो दूसर सब्द के उल्टा अर्थ के बोध जानबा होथे ओला विलोम, विपरार्थी, विपरातार्थी, विरोधी, प्रतिलोम, प्रतिलोमार्थी सब्द केहे जाथे। जइसे :-																				
<table border="1"> <tr><td>गोरा</td><td>काला (साँवला)</td></tr> <tr><td>कम</td><td>ज्यादा</td></tr> <tr><td>धूप</td><td>छाया</td></tr> <tr><td>पुराना</td><td>नया</td></tr> <tr><td>नर्क</td><td>स्वर्ग</td></tr> </table>	गोरा	काला (साँवला)	कम	ज्यादा	धूप	छाया	पुराना	नया	नर्क	स्वर्ग	<table border="1"> <tr><td>ओगगर</td><td>करिया / साँवर</td></tr> <tr><td>कमी / कमती</td><td>बेसी</td></tr> <tr><td>घाम</td><td>छाँव / छाँव</td></tr> <tr><td>जुन्ना</td><td>नवाँ</td></tr> <tr><td>नरक</td><td>सरग</td></tr> </table>	ओगगर	करिया / साँवर	कमी / कमती	बेसी	घाम	छाँव / छाँव	जुन्ना	नवाँ	नरक	सरग
गोरा	काला (साँवला)																				
कम	ज्यादा																				
धूप	छाया																				
पुराना	नया																				
नर्क	स्वर्ग																				
ओगगर	करिया / साँवर																				
कमी / कमती	बेसी																				
घाम	छाँव / छाँव																				
जुन्ना	नवाँ																				
नरक	सरग																				
प्रकार :- विलोम शब्द अनेक प्रकार के होते हैं। 1. पूर्व निश्चित या रूढ़ - ऐसे विलोम शब्द विरोधी शब्द से एकदम अलग होते हैं।	प्रकार :- विलोम सब्द कई किसम के होथे। 1. अइसन विलोम उल्टा सब्द विरोधी सब्द ले अलगेच होथे।																				

1) पूर्व निश्चित या रूढ़ शब्द

ऐसे विलोम शब्द अनुलोम शब्द से सर्वथा भिन्न होते हैं। इनमें किसी प्रकार का साम्य नहीं होता है।

(अइसे विलोम सब्द अनुलोम सब्द ले अलगेच किसम के होथे। येमा कोनो किसम ले दूसर सब्द ले बरोबरी नई होवय)

जैसे/जइसे :

(i) स्वतंत्र शब्द

छत्तीसगढ़ी / हिन्दी	छत्तीसगढ़ी / हिन्दी
अंधियारी (अंधकार)	उजियारी / अंजोरी (प्रकाश)

अपन (अपना)	बिरान (परया)
अम्मट (खट्टा)	मीठ (मीठा)
उज्जर (स्वच्छ)	मइलहा (गंदा)
उठना (उठना)	बइठना (बैठना)
उतरना (उतरना)	चघना (चढ़ना)
उतलंगहा (शरारती/उत्पाती)	मिटकहा (शांत रहने वाला)
ओगगर (गोरा)	सौवर (सौंवला)
उबरना (शेष बचना)	खंगना (कम पड़ना)
कमी (कम)	बेसी (अधिक)
काँटना (काटना)	जोड़ना (जोड़ना)
खुहार (बर्बाद)	अबाद (आबदा)
घाम (धूप)	छाँव (छाया)
चघऊ (चढ़ाऊ)	उतारू (ढालू)
जुन्ना (पुराना)	नवाँ (नया)
झुक्खा (सूखा)	गिल्ला (गीला)
दतला (लंबे दाँतों वाला)	भोभला (दंतहीन)
दानी (दान देने वाला)	सूम (कूपण)
नरक (नर्क)	सरग (स्वर्ग)
निमारना (छाँटना)	मिंझारना (मिलाना)
पक्का/पाका (पका हुआ)	कइंच्या/काँचा (कच्चा)
मोट्टा (मोटा)	पातर (पतला)
लट्टा (निकट)	दुरिहा (दूर)
संज्ञा (संध्या)	बिहिनियाँ (प्रातः)

(ii) लिंग के आधार पर – छत्तीसगढ़ी में भी कुछ रूढ़ शब्द लिंग के आधार पर विलोमार्थी होते हैं जो केवल संज्ञा शब्द होते हैं।

यद्यपि ऐसे रूढ़ विलोमार्थी शब्दों की संख्या बहुत कम है किंतु बहुप्रचलित, व्यावहारिक एवं महत्वपूर्ण हैं। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं। (छत्तीसगढ़ी मा घलोक रूढ़ सब्द लिंग के मुताबिक विलोमार्थी होथे, जेहा संज्ञा सब्द होथे। अइसना सब्द कमती होथे फेर मनखे के मुँह ले बेरा बखत मा निकलथे अऊ महत्व के होथे।

जैसे/जइसे :

छत्तीसगढ़ी/हिन्दी	छत्तीसगढ़ी/हिन्दी
कुकुर (कुत्ता)	कुतन्निन (कुतिया)
दमाँद (दामाद)	बेटी (पुत्री)
बइला (बैल)	गइया/गाय (गाय)
बबा (दादा)	दाई (दादी)
बाबू (लड़का)	नोनी (लड़की)
भाई (भाई)	बहिनी (बहन)
भतार (पति)	मेहेरिया (पत्नि)
मरद (पुरुष)	तिरिया (स्त्री)

2) निर्मित शब्द – हिन्दी की भाँति छत्तीसगढ़ी में भी रूढ़ शब्दों की अपेक्षा निर्मित विलोम शब्दों की संख्या अधिक है। साथ ही इनकी निर्माण विधि में भी भिन्नता है। इसी भिन्नता के आधार पर इसे निम्नलिखित वर्गों में विभाजित किया जा सकता है :-

(छत्तीसगढ़ी मा घलोक रूढ़ सब्द ले बनाए उलटा सब्द जादा हे, जेहा समे, जघा अऊ उपयोग के सती अलगेच होथे। येकरे सती ऐला अलग-अलग बाँटे गेहे)

- (i) स्त्रीलिंग वाचक प्रत्यय लगाकर – छत्तीसगढ़ी में स्त्रीलिंग वाचक विलोमार्थी शब्द बनाने के लिए – 'ई', 'इन' एवं 'निन' प्रत्ययों का प्रयोग होता है। इन प्रत्ययों के प्रयोग से संज्ञा एवं विशेषण दोनों प्रकार के स्त्रीलिंग वाचक शब्दों का निर्माण होता है। इनके पृथक-पृथक कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं। (छत्तीसगढ़ी में स्त्रीलिंग वाचक उलटा सब्द बनाये बर 'ई', 'इन' एवं 'निन' प्रत्यय के लगाए जाथे। येकर ले संज्ञा अऊ बिसेषण दोनों किसम के उलटा सब्द बनथे।

जैस/जइसे :

- (अ) संज्ञा शब्दों में

छत्तीसगढ़ी / हिन्दी	छत्तीसगढ़ी / हिन्दी
कुकरा (मुर्गा)	कुकरी (मुर्गी)
कुवाँरा (अविवाहित बालक)	कुवाँरी (अविवाहित बालिका)
गोसईया (पति, स्वामी)	गोसइन (पत्नी, स्वामिनी)
जेठौत (ज्येष्ठ का पुत्र)	जेठौती (ज्येष्ठ की पुत्री)
ठाकुर (मालिक)	ठाकुरइन (मालकिन)
बछरू (गाय का नर बच्चा)	बछिया (गाय का मादा बच्चा)
भइँसा (भैंसा)	भइँसी (भैंस)
सउँजिया (कृषि – नौकर)	सउँजनिन (कृषि-नौकर की पत्नी)

- (ब) विशेषण शब्दों में

छत्तीसगढ़ी	छत्तीसगढ़ी / हिन्दी
उचका	उचकी (उछल-उछल कर चलने वाली)
उटकहा	उटकही (उलाहना देने वाली)
कबरा	कबरी (विविध रंगों वाली)
खपचलिहा	खपचलहिन (बहाना करने वाली)

गपोड़हा	गपोड़हिन (गप मारने वाली)
गुड़िहार	गुड़िहारिन (बैठकों में भाग लेने वाली)
गुनवंता	गुनवंतिन (गुणवती)
गोठकाहर	गोठकाहरिन (अधिक बातें करने वाली)
चेरिहा	चेरहिन (निंदा करने वाली)
छेरका	छेरकिन (बकरी चराने वाली)
जकहा	जकही (पगली)
जोदर्रा	जोदरी (अधिक मोटी)
टसकहा	टसकहिन (चुपचाप खिसकने वाली)
टुटपुंजिहा	टुटपुंजहिन (सीमित साधन वाली)
टुमहौ	टुमही (स्वप्रशंसक)
ठेपला	ठेपली (बौनी)
ढिंठहा	ढिंठही (जिद्दी स्वभाव वाली)
तरकहा	तरकहिन (चिढ़ने वाली)
दुलरवा	दुलवरिन/दुलवरी (लाड़ली)
धनमंता/धनवंता	धनमंतिन/धनवंती (धनी स्त्री)
धुमरा	धुमरी (मोटी)
नटकुटिहा	नटकुटहिन/नटकुटही (नटखट स्त्री)
निंदरा	निंदरी (गहरी नींद सोने वाली)
पंड़रा	पंड़री (गोरी)
पढ़ंता	पढ़ंतिन (अधिक पढ़ने वाली)
बइहा	बही (पगली)
बउना	बउनी (नाटी)
बपुरा	बपुरी (बेचारी)

भजनहाँ	भजनहिन / भजनहीं (कीर्तन या भजन गाने वाली)
मुचमुचहा	मुचमुचहिन / मुचमुचही (होंठ दबाकर हँसने वाली)
रेगड़ा	रेगड़ी (दुबली)

- (ii) **उपसर्ग लगाकर** – कुछ विलोम शब्दों का निर्माण शब्दों के पूर्व विपरीत अर्थवाचक उपसर्ग लगाकर किया जाता है। छत्तीसगढ़ी में ऐसे उपसर्गों के रूप में 'अ, अन, अप, अब, आन, आने, कु, न, बि' आदि प्रयोग में आते हैं। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं। (कोनो-कोनो उलटा शब्द मन में उलटा अर्थ वाले उपसर्ग 'अ, अन, अप, अब, आन, आने, कु, न, बि' लगाये जायें)

जैसे/जइसे :

उपसर्ग	शब्द	विलोम शब्द
अ	काट	अकाट (आकट्य)
	कारज	अकारज (व्यर्थ)
	गम	अगम (अनुमान से परे)
	गियानी	अगियानी (अज्ञानी)
	चेतहा	अचेतहा (बेसुध)
	छीम	अछीम (अक्षम्य)
	टल	अटल (स्थिर)
	नीत	अनीत (अन्याय)
	पीकहा	अपीकहा (अंकुरण रहित)
	बीजहा	अबीजहा (बीज के अयोग्य)
अन	गढ़ल	अनगढ़ल (प्राकृतिक)